वर्ष 38 अंक : 1 9.2.2015 सोमवार (जनवरी-फरवरी) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 20.00 वार्षिक : ₹ 100.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

Shastriji Maharaj Saardh Shatabdi

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

आत्मीय युवा महोत्सव

जनवरी, 2015

उत्तर भारत के गुणातीत समाज की ओर से हार अर्पण करते– पू. सुहृदस्वरूपस्वामी एवं पू. अक्षरस्वरूपस्वामी

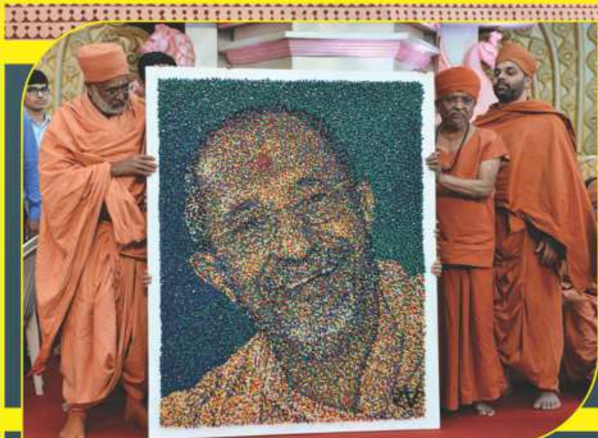

पू. गुरुजी द्वारा प.पू. स्वामिजी की पुशपिन मूर्ति अर्पण...

गुणातीत विभूति के 'स्वानुभव' से प्रगट विभु का सम्यक् दर्शन

माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचम तिथि अर्थात्– 'बसंत पंचमी'! वस्तुतः उत्तर भारत में इस दिन विद्या, संगीत, कला और संस्कृति की देवी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। बसंत ॠतु के आगमन पर स्त्रियाँ पीले वस्त्र धारण करती हैं; मिष्टान्न के रूप में पीले रंग के केसरी भात (बिरंज) बनाए जाते हैं! बंगाल में तो सरस्वती देवी की प्रतिमा बना कर, उसकी पूजा-अर्चना करके गंगा में प्रवाहित किया जाता है। पंजाब के फिरोजपुर जैसे शहरों में गगन में पतंग उड़ा कर 'बसंत उत्सव' मनाया जाता है। बसंत पंचमी ऐसा शुभ दिन है जब विवाह, गृह प्रवेश जैसे मांगलिक प्रसंगों को संपन्न करने के लिए कोई मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती। सो, बसंत पंचमी अर्थात् हर्षोत्सव!

भगवान स्वामिनारायण ने तो इस दिन को, **'शिक्षापत्री'** की भेंट द्वारा हर्ष सदैव बरक़रार रखने की कुंजी देकर, अविस्मरणीय बना दिया। श्रीजी महाराज के स्वहस्त से लिखित यह छोटा-सा ग्रंथ–

- मानव को 'मानव' बना कर, महामानव के मार्ग पर चलाने हेतु मार्गदर्शक है।
- आचार, व्यवहार और प्रायश्चित् से अपने भीतर एवं जीवन में परमात्मा को बसाने का स्रोत है।
- साधकों की साधना के लिए दीपस्तंभ है।

शिक्षापत्री की जयंती के चालीस वर्ष बाद सत्संग में **बसंतपंचमी** की महिमा और भी बढ़ गई, जब वड़ताल से तीन गाँव की दूरी पर ही **'महेळाव'** गाँव में **सन् 1865** में **31 जनवरी** को स्वामिनारायण परायण परिवार में, शिशु **'डुंगर भक्त'** के रूप में, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ। बचपन से ही डुंगर भक्त प्रतिदिन सभी के आकर्षण का केन्द्र थे। वे एक वर्ष के थे तभी अनादि **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** वड़ताल जाते हुए महेळाव पधारे थे। बड़े भ्राता मथुरभाई डुंगर भक्त को स्वामिश्री से आशीर्वाद दिलवाने के लिए लाए। स्वामिश्री ने अपना वरद्हस्त बाल भक्त के मस्तक पर रखते हुए कहा–

यह बालक तो साधु होकर श्रीजी महाराज की 'सर्वोपरि निष्ठा' प्रवर्ताएगा।

यूं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने संकेत दे ही दिया था कि वह अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना व्यापक में फैलाएगा। साधु बनने की उनकी उत्कंठा तो दस वर्ष की आयु में ही झलकने लगी थी। जब गांव के धनिक राईजीभाई पटेल ने डुंगर भक्त से कहा – *डुंगर, तू यदि मेरे पास रहेगा तो तुझे पेटलाद के अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दूँगा और अंग्रेज राज्य का बड़ा अमलदार बनाऊँगा।*

हास्य के साथ इस प्रस्ताव की उपेक्षा करते हुए **डुंगर भक्त** ने शूरवीरता से कह दिया–

पढ़-पढ़ कर भी नौकरी करके परतंत्र रहना पड़े, ऐसी पढ़ाई किस काम की? मुझे तो साधु होना है, और विद्वान होकर कइयों को ब्रह्मविद्या पढ़ानी है...

और... इतिहास साक्षी है कि डुंगर भक्त को सबसे पहले, श्रीजी महाराज को धारे, **सद्. विज्ञानानंदस्वामी** का जोग हुआ था। शुरुआत में तो पुत्र मोह के वश पू. धोरीभाई ने अरुचि व्यक्त की। लेकिन, पुत्र के वैराग्य से

आख़िरकार पिता का अंतर द्रवित हो गया और ज्ञानचक्षु से पुत्र में परमतत्व के स्वरूप का दर्शन करके त्यागाश्रम के लिए सहर्ष मंजूरी दी और... 17 वर्ष की आयु में **आचार्य श्री विहारीलालजी** के वरद् हस्तों, वड़ताल में साधु की दीक्षा प्राप्त करके डुंगर भक्त **'साधु यज्ञपुरुषदास'** बन कर अविरत सेवा में जुट गए। उनकी अतिशय सेवा के फलस्वरूप ही मानो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के अत्यंत कृपापात्र **अ.म.मु. भगतजी महाराज** का उन्हें जोग हुआ और सर्वप्रथम उनसे ही अक्षर व पुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना की बातें सुनीं, जो अंतर में बैठ गईं। इस उपासना के रहस्य को सद्. विज्ञानानंदस्वामी ने भी समर्थन दिया। तत्पश्चात् उन्होंने सर्वदेशीय समझ से, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के अन्य कृपापात्र **अ.म.मु. जागास्वामी** को राजी करके निम्न आशीर्वाद प्राप्त किया –

आज से मैं जो-जो सत्कर्म करूँगा, उन सब का पुण्य तुम्हें मिलेगा।

अ.म.मु. भगतजी महाराज (प्रागजी भक्त) और अ.म.मु. जागास्वामी (जागाभक्त) के स्वधामगमन के पश्चात्, स्वामिश्री ने सौराष्ट्र में विचरण करके, 'अक्षरपुरुषोत्तम' की निष्ठा सभी को दृढ़ करवाई। शिखरबद्ध मंदिर में 'अक्षरपुरुषोत्तम' की धातु की मूर्ति स्थापित हो, यही उनका एक मात्र ध्येय था। लेकिन, उनकी प्रतिभा कइयों से सही नहीं जाती थी। अतः विरोधियों द्वारा स्वामिश्री का अस्तित्व ही समाप्त कर देने की योजना जान कर, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के कृपापात्र **अ.म.मु. कृष्णजी अदा** स्वामिश्री से परभाव में बोले–

मैं ही भगतजी और मैं ही जागास्वामी बोल रहा हूँ कि वड़ताल का दरवाज़ा छोड़ दो...

और... हरिकृष्ण महाराज की चमत्कारी मूर्ति के समक्ष स्तुति करके, निम्न प्रार्थना करते हुए, स्वामिश्री पाँच संतों के साथ वड़ताल से निकले –

महाराज! हमारा तो अलग होने का तनिक भी संकल्प नहीं है, लेकिन यदि आपकी इच्छा अलग करने की है, तो आप हमारी सहायता के लिए अखंड साथ रहना।

भगवान पर उन्हें अटूट विश्वास था; इसलिए विरोधियों का किसी भी प्रकार से प्रतिकार न करते हुए, साधुता रख कर, मुट्ठीभर संतों और हरिभक्तों के सहयोग से वे 'अक्षरपुरुषोत्तम' की निष्ठा का प्रचार करते रहे। वड़ताल से निकलने के बाद भी उनमें आज्ञा-उपासना-दृढ़ता तथा साधुता वैसी ही बनी रही। स्त्री और धन के वे पूर्णतः त्यागी थे। निष्काम, निर्लोभ आदि पंचवर्तमानों का वे दृढ़ता से पालन करते थे और... आख़िरकार **5 जून सन् 1907** के शुभ दिन 'बोचासण' गाँव में नवनिर्मित मंदिर के मध्य सिंहासन पर, भगवान स्वामिनारायण के साथ उनके रहने का धाम अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की सर्वप्रथम मूर्ति स्थापित करके, उन्होंने **'बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था'** – BAPS की मंगल शुरुआत की।

अपनी हयाती में उन्होंने बोचासण के अलावा सारंगपुर, गोंडल, अटलादरा और गढडा में श्री अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिर स्थापित करके भगवान स्वामिनारायण की अखंड प्रगट परंपरा का द्वार मुमुक्षुओं के लिए खोल दिया। **प्रगट गुणातीत स्वरूपों के कारण यहाँ सत्संग हरा-भरा महसूस होता है।**

शून्य में से सृजन करने वाले, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की एक बहुत बड़ी विशेषता थी कि कोई भी कार्य कितना ही असंभव दिखता हो, लेकिन वे दृढ़तापूर्वक कहते – *'कार्य होगा'!* उन्हें भगवान होने या पुजवाने की तनिक भी इच्छा न थी। 'अक्षरपुरुषोत्तम' अर्थात् भक्तसहित भगवान की उपासना के प्रति उनका समर्पण देख कर, कई लोग कटाक्ष में कहते भी – *'इन्हें भगवान बनना है।'* परंतु, उन्होंने अपने हर कार्य में भगवान को ही आगे रखा था। जीवनभर अपने सुख के लिए कभी कुछ नहीं किया। बड़े-बड़े मंदिर, धर्मशाला बनवाने हेतु गाँव-गाँव भिक्षा माँगते हुए सब कुछ सह लेना, यही उनके लिए आराम था।

इससे भी अधिक, उन्होंने स्थावर मंदिर की सेवा को निमित्त बना कर, संत के साथ आत्मीयता से जुड़े निष्ठावान सत्संगी परिवारों में 'कुटुंबभाव' की नींव डाली। जैसे –

* गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज जब भी वीरसद पधारते, प.पू. सोनाबा अपने बच्चों के साथ उनके दर्शन करने के लिए जातीं। छोटी उम्र के **प.पू. कांतिकाका** स्वामिश्री के पास जाते, तो स्वामिश्री उन्हें बहुत प्यार करते और उनकी जेब में चिट्ठी जैसा एक कागज़ डाल देते। प.पू. सोनाबा समझ जातीं कि स्वामी ने पैसे मंगाए होंगे और जब वे काग़ज़ पढ़तीं, तो उसमें वही बात लिखी होती। साथ ही साथ यह भी लिखा होता कि *कहीं और से सेवा आएगी तब ये पैसे वापिस लौटा दूँगा।* लेकिन, जब दोबारा आते तो ऐसी ही दूसरी चिट्ठी भिजवा देते और लिखा होता कि *पिछली बार के पैसे मैंने तुम्हारी सेवा में गिन लिए हैं। अब दोबारा जब आऊंगा तब यह जरूर लेता आऊँगा।* प.पू. सोनाबा के परिवार के प्रति स्वामिश्री का खूब अपनापन होगा तभी ऐसा हक़ वे कर सकते होंगे न!
* इसी प्रकार कुटुंबभाव के सत्संग का आदर्श स्थापित करने हेतु गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने **प.पू. कांतिकाका को ब्रह्मस्वरूप काकाजी से जोड़ा** और आशीर्वाद दिया –

  'तुम दोनों भाई-भाई बन कर रहना, ब्रह्मांड डोलाओगे...'

  देखा जाए तो दोनों की प्रकृति में आकाश-पाताल जितना फर्क दिखाई देता। ब्रह्मस्वरूप काकाजी कई बार कहते –

  कांति तो मुंबई का ताबूत निकाले ऐसा है। मतलब – कहीं से कैसे भी अपना स्वार्थ सिद्ध कर ले।

  लेकिन, शास्त्रीजी महाराज के वचन से राम-लक्ष्मण के भ्रातृभाव को भी भुला दे, ऐसे आत्मीयभाव और स्नेहलभाव से हम जीवन जिए हैं।

  घर-धंधा-कारोबार साझा था, सो कई प्रसंग बने होंगे जिससे संबंधों में उतार-चढ़ाव आ जाता, खटास उत्पन्न हो जाती, लेकिन गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की ओर नज़र रख कर उन्होंने संबंध ज़बरन नहीं, बल्कि गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की प्रसन्नता हेतु कायम रखा।

  फलस्वरूप, **जिस 'आत्मीयता' का आज हम जोर-शोर से उद्घोष करते हैं और जिस 'आत्मीयता' के ध्वज के नीचे हमारे उत्सव होते हैं - मनाए जाते हैं, उस आत्मीयता की शुरुआत ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी और प.पू. कांतिकाका की त्रिपुटी ने ताड़देव से की।** सो

ही, **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने 'ताड़देव' को **आत्मीयता की गंगोत्री** कह दिया! इस प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने स्थावर मंदिर के साथ-साथ उनसे जुड़े सत्संगियों के देह और घर को मंदिर बना कर जंगम तीर्थ बनाने का कार्य किया और... इसी बदौलत आज **'गुणातीत समाज'** का अस्तित्व है।

यूँ गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने 86 वर्ष की आयु तक अनेक कष्टों को सहन करके, निरंतर विचरण करते हुए दर्शन, सेवा, समागम से संबंध में आए मुक्तों को निहाल किया। घुटनों की असह्य वेदना एवं हृदय रोग के कष्ट की तनिक भी परवाह नहीं की–ऐसी दिव्य विभूति थी ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज! इस **24 जनवरी–बसंतपंचमी को गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य की सार्ध शताब्दी (150 वर्ष) मनाई गई!**

इनकी 'शताब्दी' के अवसर पर 1965 में **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** द्वारा दिया गया निम्न संदेश आज हमारे लिए आशीर्वाद रूप है –

प्रगट *स्वरूप के लौकिक एवं अलौकिक अनुभव अनेक प्रकार के होते हैं।*
उनकी दिव्य स्वरूप में तत्त्व से पहचान हो
और जीव को केवल ब्रह्मरूप करके भगवान से जोड़ देने के जो अनुभव हों,
वे ही सच्चे आध्यात्मिक अनुभव गिने जाते हैं।
इस प्रकार से देखते हुए तो 'वड़वानल अग्नि' (समुद्र के भीतर रही अग्नि) जैसे
प्रगट गुरुरूप हरि पूज्य शास्त्रीजी महाराज की सत्संगति में
केवल उनकी कृपा से ही थोड़ा कुछ समझ आया है।
बचपन में पिताजी के साथ जब उत्सव में जाते,
तब शास्त्रीजी महाराज सभा में बातें करते हों, उनके सामने देखते रहने का, सुनने का मन होता।
खेल-कूद बंद हो जाती और अनगिनत लोग होने के बावजूद बिल्कुल शांति महसूस होती।
उनके चरणारविंद में झुक जाने का मन होता-ऐसा अजीब आकर्षण रहता था।
उस समय शास्त्रीजी महाराज खूब निश्चयात्मक रीति से, मानो हमें भीतर में ही बात करते हों,
यूँ मन में पिरो देने हेतु छोटा सूत्र कहते, जो बालकबुद्धि में बैठ जाता।
जगत की दृष्टि से उनकी सलाह उचित ना लगे,
लेकिन ***जीव को भगवान के समीप ले जाना ही बड़े पुरुष का मक़सद होता है।***
सन् 1943 में पढ़ाई पूर्ण होने के बाद मुझे अफ्रीका जाना चाहिए या नहीं, इस असमंजस में मैं था।
स्वयं ही मानो हमें सत्संग करवाने की गरज़ रखते हों, यूं हमारी देखभाल करते हुए,
उन्होंने नड़ियाद आकर 'दर्शन' हेतु सारंगपुर चलने की मुझे आज्ञा की।
और... 'समाधि प्रकरण' जो चलता था, उसमें शंका करने के लिए मना किया। फिर सारंगपुर ले गए।
देश में (भारत में) रह कर सत्संग करोगे तो सर्वथा सुखी होओगे, ऐसा आशीर्वाद दिया।

(संत की) स्मृति समेत वचनामृत पढ़ने की आज्ञा की ;
और योगीजी महाराज से इनके रहस्य को समझने-सीखने के लिए कहा।
उनके आशीर्वाद से भक्तसहित भगवान की साकार उपासना दृढ़ होती जा रही है,
और फिलहाल सत्संग का वही सुख पूज्य योगीजी महाराज द्वारा मिल रहा है।
एक बार मुंबई में नंदाजी की कोठी पर छगनभाई, कांतिभाई एवं मुझे बुला कर
लोया का तीसरा वचनामृत समझाया।
'भगवान एवं संत के लिए क्या न हो सके' – ऐसा जीव में बल भर के गढपुर (मंदिर) के लिए बड़ी 'सेवा' ली।
खूब राजी होकर चंदन से अर्चना करवा कर गले मिले और 'ब्रह्मरूप होकर सदैव सुखी होंगे' ऐसा आशीर्वाद दिया।
अखंड राजी रहने की मैंने प्रार्थना की, तो बोले–
'अक्षरधाम का सुख जीतेजी यहीं मिलेगा, लेकिन हमें –संत को कभी मोहताज नहीं करना।'
वचनामृत गढडा मध्य के 54 एवं 7 का सार समझ लेने के लिए कहा,
जिससे एकांतिक भक्त की प्रसन्नता से ही भगवान अखंड राज़ी होते हैं यह सैद्धान्तिक बात समझ में आई।
स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज को हम क्या पहचान पाएँगे?
परंतु हमेशा ***उनकी अनुवृत्ति में रहते और उनके साथ एकत्वभाव को पाए हुए***
पूज्य योगीजी महाराज के द्वारा उनकी अलौकिक स्थिति एवं महिमा को कुछ समझ पाएँगे।
स्वामिश्री बीमारी ग्रहण करके मुंबई में नंदाजी की कोठी में ठहरे हुए थे।
एक शाम मैं दर्शन करने के लिए गया था, तब स्वामिश्री विश्राम कर रहे थे।
मैंने सहज ही कहा– 'सो गए हैं' तो शांति रखें;
तब ***पूज्य योगीजी महाराज*** *बोले – वे तो दूसरे ब्रह्मांड में काम करने के लिए गए हैं। उन्हें 'नींद' नहीं होती!*
कैसा दिव्यभाव!
फिर तो स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज में भगवान के लक्षण बार-बार दिखाई देने लगे।
भले ही पदार्थों का ढेर हो, लेकिन उसकी परवाह किए बिना, भक्तों की ओर प्रेमभरी दृष्टि से देखते,
और सेवा करने वाले पर अत्यंत खुश हो जाते।
व्यावहारिक कार्य में रक्षा करते। राजाधिराज की भाँति दिव्य सुख देते।
कई बार व्यावहारिक कार्यों के कारण यदि किसी सत्संगी के बारे में कोई गलत बोलता,
तो अपनी अरुचि दिखा कर हरिभक्तों का तो केवल गुण ही लेने और पक्ष रखने के लिए कहते।
'संत के वचन से सेवा करने से अतिशय बड़ा फल मिलता है...' *यूँ कह कर,*
स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज सेवा कर लेने की सूझ देते।
अब समझ में आता है कि ***ऐसे मांगने वाले कहाँ और जीवदशा वाले हम कहाँ?***
उनकी करुणा और कृपादृष्टि से ही सेवा हो पाती थी।

बड़ी सेवा तो 'प्रगट की निष्ठा प्रवर्तानें की' है*; सो, इस कार्य में लग पड़ना–*
ऐसा उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा था।
पूज्य योगीजी महाराज की भी सम्मति मिली। आनंद-आनंद हो गया।
उस समय तो 'स्वरूप' जैसा था वैसा समझ में नहीं आता था,
लेकिन केवल उनके संकल्प से ही अब सब कुछ समझ में आता जा रहा है, यही उनकी अनहद दया है।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

इस 3 फरवरी को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुए 63 वर्ष पूर्ण हुए!

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के पिताश्री डॉ. नाथाभाई से पहले ही कह दिया था कि *डॉक्टर! आपके दोनों पुत्र महामुक्त हैं।* **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** की सार्ध शताब्दी के वर्ष में **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** का उनसे संबंध का दर्शन निम्न प्रसंगों से करें–

* अक्षरनिवासी **पू. गोरधनकाका** ने बताया था कि–बीमारी ग्रहण करके **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** 'मुंबई' आए थे और 'सूर्यनारायण की वाड़ी' में ठहरे हुए थे। वे इतने कमज़ोर हो गए थे कि लेटे हों तो अपने आप करवट भी नहीं ले सकते थे। परंतु **जैसे ही उन्हें बताया जाता कि *डॉ. नाथाभाई के बेटे 'दादुभाई साहेब' आए हैं,* तो वे फट् ऐसे बैठ जाते, मानो उन्हें कुछ हुआ ही न हो।** उनके इस चरित्र को गहराई से सोचें तो ख्याल आएगा कि **प.पू. काकाजी का उनके साथ कैसा अनोखा संबंध होगा!**
* ब्रह्मस्वरूप काकाजी के जीवन में नकारात्मक या हल्की सोच या उदासीनता का कोई स्थान ही नहीं था। बचपन में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था– *'मैं भीख नहीं मांगूँगा। मैं खूब मज़दूरी करके भी स्वतंत्र जीवन जीऊँगा। मुझे किसी का मोहताज होकर नहीं जीना है। मोहताज जीवन में मुझे रस नहीं।'*
  यूँ छोटी उम्र के एक बालक के मुख से ऐसी बात निकले, यह कोई सामान्य बात नहीं थी। पर वाकई, स्वाभिमानी, निडर और शूरवीर बालक की यह ख़्वाहिश सिद्ध हुई। वर्षों के बाद ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने राज़ी होकर काकाजी को आशीर्वाद दिया– ***'दादु! तू किसी का मोहताज नहीं होगा, सभी तेरे मोहताज होंगे'*** और उस आशीर्वचन को काकाजी के जीवन में साकार हुए हम सभी ने देखा है!
* **प.पू. गुरुजी** ने एक बार निम्न अद्भुत प्रसंग बताया था–
  'सन् 1955-1956 की यह बात है। प.पू. काकाजी का सरकार से कुछ केस चल रहा था। तब ***गुरुहरि योगीजी महाराज*** *बोले थे–* ***''दादुभाई के लिए 'अक्षरदेरी' गिरवी रखनी पड़े तो भी ...''***
  इस बात की गहराई को समझें। 'अक्षरदेरी' यानि ? साकार ब्रह्म मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की अंत्येष्ठि जहाँ हुई वह समाधि स्थान! ***योगीबापा का सर्वस्व-प्राण!*** *और... आज तो वह BAPS का लोगो है!* ***ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने गुरुहरि योगीबापा को पूर्ण रूप से समर्पित होकर, कैसा जीवन जिया होगा कि अपने प्राणपुरुष के लिए वे उनके प्राण से भी अधिक बने!***
  तभी तो वे ***(गुरुहरि योगीजी महाराज) बोले थे – जिस प्रकार भगवान बलि राजा से बंधे हुए हैं,***

उसी प्रकार शास्त्रीजी महाराज दादुभाई से हमेशा के लिए बंधे हुए हैं। सो, आज भी जो प.पू. काकाजी को रखेगा, उससे गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज बंधे हुए रहेंगे ही न?

गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें 1952 में भगवान का 'साक्षात्कार' करवा कर न केवल अपनी पहचान कराई, बल्कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के रूप में प्रभु ने हमें क्या भेंट दी है यह भी स्पष्ट किया है।

श्री रामकृष्ण परमहंस ने कहा था –

दरअसल, परमेश्वर का साक्षात्कार करके आदेश प्राप्त किए हुए पुरुष ही यथार्थ में धर्म-प्रचार के योग्य होते हैं, दूसरे लोग तो अपनी-अपनी डफली बजाने वाले केवल नाममात्र के प्रचारक होते हैं।

सच, गुणातीत समाज की नींव में समाए ब्रह्मस्वरूप काकाजी की यशगाथा हमें मार्मिक संदेश दे जाती है।

तो आओ, **5 मार्च, हुताशनी – भगतजी महाराज की प्राकट्य तिथि**

एवं

6 मार्च, धुलेन्डी – संत भगवंत प.पू. साहेबजी की प्राकट्य तिथि पर

उनके निरामय स्वास्थ्य हेतु भजन-प्रार्थना करते हुए

उनके द्वारा ब्रह्मस्वरूप काकाजी के श्रीचरणों में समर्पित निम्न माहात्म्य अर्घ्य को पढ़ें –

*'**3 फरवरी** का दिन' **गुणातीत समाज** के लिए क्रांतिकारी दिन। काकाजी की बात क्रांतिकारी थी।*

जो महाराज अक्षरधाम में हैं, वे ही आज योगीजी महाराज के रूप में धरती पर विचर रहे हैं... उनकी मन, कर्म, वचन से सेवा कर ली जाए, तो 'आत्यंतिक कल्याण' हो जाए–

इस बात का बिगुल उन्होंने फूंका जिसके फलस्वरूप 'गुणातीत समाज' का सर्जन हुआ। योगीजी महाराज के प्रति देखने की सब की दृष्टि बदल गई। हम जैसा कहते, वैसा योगीबापा किया करते थे, इसलिए वे सभी को जँचते थे। लेकिन, वे जैसा कहें वैसा हम करें, तभी जीवन में परिवर्तन संभव होगा।

*हम सभी के जीवन में योगीबापा का ऐसा माहात्म्य समझाने का कार्य काकाजी ने किया। साथ ही साथ 'महाराज और स्वामी' हमारे उपास्य स्वरूप हैं इसकी दृढ़ता भी कराई। प्रगट के उपासक 'प्रत्यक्ष स्वरूप' को पकड़ते हैं, सो महाराज और स्वामी गौण हो जाते हैं। पर, **नींव के स्वरूप – महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज को छोड़ कर केवल 'प्रत्यक्ष' की महिमा गाएँगे तो नींव खिसक जाएगी।** यह बात वे दृढ़तापूर्वक कहते। उन्होंने अपने जीवन में महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के सिवा कुछ भी रखा नहीं था। उन्होंने अपार कसनी सही। हरिभक्तों के गुण-दोष देखे बिना उनकी सहाय के लिए वे दौड़े जाते। माहात्म्य और भक्ति का मूर्तिमान स्वरूप थे वे। काकाजी ने सच्ची उपासना की बात समझाई और सबका ज़हर चूस कर सभी को शुद्ध किया...*

*वे परोक्ष नहीं हुए हैं। पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी (गुरुजी), पू. दिनकरभाई जैसे साधुओं की उन्होंने हमें भेंट दी है। गुरुजी, दिनकरभाई द्वारा आज काकाजी का कार्य जारी रहा है। **दिल्ली में** अक्षरपुरुषोत्तम महाराज,*

शास्त्रीजी महाराज को प्रतिष्ठित करने का संकल्प उन्होंने ***गुरुजी*** *द्वारा साकार किया। यूँ दिल्ली में जंगम और स्थावर दोनों तीर्थ रचे।* ***शिकागो में पू. दिनकरभाई*** *के घर पर भी मंदिर बनाया। ताड़देव में भी* ***पू. भरतभाई और युवक*** *काकाजी का कार्य आगे बढ़ा रहे हैं। यूँ गुणातीत समाज के सर्जन में संतों-बहनों-युवकों को तैयार करके काकाजी हमारे बीच अमर रहे हैं।*

उन्होंने जो सैद्धांतिक बातें की हैं वे नज़रसमक्ष रख कर जीएँ, माहात्म्ययुक्त सेवा करें। धुन, भजन, प्रार्थना करते हुए उनका ऋण अदा करें।

– संत भगवंत प.पू. साहेबजी

प.पू. गुरुजी ने भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी का परिचय देते हुए कहा है –

काकाजी *कहतेः जब से मैंने शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज के दर्शन किए हैं, मुझे उनके प्रति 'दिव्यभाव' अखंड रहा है।*

काकाजी क्या विभूति थी, वह ख्याल इस बात से पड़ेगा। हम सब इस रास्ते चले हुए हैं-चलते हैं। हमें भी ऐसे भगवत्स्वरूप संतों के प्रति दिव्यभाव रहता है; 'नहीं रहता' – ऐसा नहीं है। पर, हमारा मूड ठीक होगा तो हम कहेंगे कि अहो हो ! इन्होंने क्या स्मृति दी ! पर माईन्ड यदि अपसॅट होगा या हमारे मन के मुताबिक संत बर्ताव नहीं करेगा, तो फट् से कह देंगे कि ऐसा थोड़े ही होता है ? ऐसा क्यों करते होंगे ? इस प्रकार माईन्ड एकदम रिएक्ट कर जाता है। ***काकाजी अध्यात्म की किस कक्षा के होंगे कि शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज की तो बात ही अलग है, भक्तों के अंदर भी उन्हें कभी प्राकृतभाव नहीं आया...*** *कई बार इन्होंने मुझसे कहा है –*

मैं तेरी हर चेष्टा को दिव्य मानता हूँ, तू मुझमें दिव्यभाव क्यों नहीं रख पाता ?

...उनका साक्षात्कार दिन या उनकी जयंतियाँ हम कितनी ही मना लेंगे, लेकिन जब तक हम काकाजी की कॉन्शियसनेस में अखंड रहते नहीं हो जाएँगे, तब तक ये सारी सेलिब्रेशन्स-उत्सव नौटंकियाँ ही बनी रहेंगी।

'काकाजी ऐसे थे, काकाजी वैसे थे' – यह कहा करने से क्या फायदा ? क्या हम ऐसे हुए ?

...काकाजी ने सारी रिसर्च कर-करके हमें तैयार माल दे दिया है कि अब तुम इस पर चलो। सच्ची ***3 फरवरी*** *यही मनाई जाए कि काकाजी - जो 'प्रगट' ही हैं, उन्हें 'प्रत्यक्ष' करने का तरीका हम आत्मसात् कर लें। काकाजी यानि – मूर्तिमान 'आत्मीयता' ! आत्मीयता आत्मा का गुण है। उसे कोई सीमा नहीं है – बॅरियर नहीं है। काकाजी हर एक के साथ आत्मीयता इसीलिए रख पाए, क्योंकि वे हमेशा आत्मसत्तारूप रहे। जब तक हमारा देहभाव है, जब तक हमारा मन है, तब तक हम हर एक के साथ आत्मीयभाव नहीं रख पाएँगे। हाँ, जो हमारे ढंग से चलेगा, उससे हमारी आत्मीयता रहेगी। हर एक के साथ नहीं रख पाएँगे। किसी न किसी आड़ में 'चूक' हो ही जाएगी। सो, सच्ची आत्मीयता रखवाने के लिए ही काकाजी ने आख़िर में हमें सूत्र दिया था कि –* ***विरोधप्रकृति वाले के साथ मैत्री रखो।*** *वह हमारे सामने आए तो हमें एलर्ट हो जाना चाहिए। एलर्ट*

क्या होना ? यही कि हमें उसके प्रति तनिक भी 'भावफेर' नहीं आए ! ऐसी प्रार्थना करना कि हे प्रभु ! मेरी इतनी रक्षा करना... सारे गुणातीत बाग में जैसे काकाजी खो गए, कुर्बान हो गए, ऐसे हम हो जाएं...

– प.पू. गुरुजी

अंत में–

15 फरवरी–स्वरूपनिष्ठा, माहात्म्यसहित दासत्वभक्ति के स्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के 80वें प्राकट्य दिन पर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के ही कहे अनुसार भीतर से–भीतर से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को नमन करें कि–

- ❖ प.पू. योगीबापा पर अटूट विश्वास रख कर और समर्पण से, आपने हर प्रकार की-बाह्य व आंतरिक जंग जीती...
- ❖ ब्रह्मस्वरूप काकाजी और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रति अनन्य भक्ति करके आप आध्यात्मिक वारिस बने...
- ❖ संबंध में आए अनंत चैतन्यों को संभालते हुए, उन्हें अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर करते हुए आप शाश्वत् शीतलता प्रदान कर रहे हैं...

तो, हे स्वामी ! आप आशीर्वाद देना कि–सत्पुरुषों के साथ आपने जिस अटल विश्वास से अटूट संबंध किया, वैसी ही चिरंजीव श्रद्धा और भक्ति हम में उदित हो और आपकी ही भाँति प्रगट स्वरूपों के दिल में बस जाएँ...

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएं

- ❋ 'अक्षरधाम' मिला, 'पुरुषोत्तमनारायण-महाराज' मिले; सो कृतार्थ हो गए ! 'अक्षरधाम में ही बैठे हैं'– ऐसी बातें करना। 'मर कर कहाँ जाएँगे ? क्या प्राप्त करेंगे ?'–ऐसी बातें नहीं करना।
- ❋ **अक्षर-पुरुषोत्तम दोनों मिले, शास्त्रीजी महाराज स्वामी जैसे गुरु मिले, तो फिर हमें ढीली-ढाली / सुस्त बातें क्यों करनी ?**
- ❋ भगवान के भक्त होकर हम भिखमंगे जैसा बर्ताव करेंगे, तो भगवान को बर्दाश्त होगा क्या ? अरे ! खाल उधेड़ देंगे।
- ❋ सकामभाव से भजनभक्ति करना–इसे तो 'हरिभक्त' का भेस ओढ़ना-ठगी करना कहा जाएगा।
- ❋ **'स्वामिनारायण' का भक्त होने के बाद इधर-उधर भटकें, इसे तो हम बक्काल (सब्जी बेचने वाला) बने, ऐसा कहा जाएगा।**
- ❋ अब कंगालियत छोड़ें और कंठ एवं हृदय में 'स्वामिनारायण' का भजन अखंड किया करें।
- ❋ **अखंड भजन** यानि– भले ही देह से हम क्रिया करें, लेकिन **हृदय के भीतर 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' होते ही रहना चाहिए।**
- ❋ अखंड भजन की आदत डालनी पड़ती है। भजन करने का अभ्यास करेंगे, तो वह भी सीख जाएँगे।
- ❋ **आज्ञा के विरूद्ध कोई भी क्रिया करें, इसे 'दोष' लगा कहा जाए।**
- ❋ **स्वामी के संबंध वाले जो भी हों, उन सभी का पक्ष रखना। (हम पर) सुख-दुःख आ पड़े, तो भी पक्ष रखना।**

* **बातें तो बहुत सुनीं, और सुनने के लिए तैयार हैं। लेकिन, इन बातों पर अमल करना चाहिए।**
* मुमुक्षु को अपने भगवान या भगवान के साधु के सिवा, कहीं सुख और शांति नहीं मिलती। शुद्ध मुमुक्षु को तो भगवान और संत ही जँचते हैं। भले ही व्यवहार में ओतप्रोत होकर इधर-उधर काम करता हो, लेकिन उसकी वृत्ति तो संत से जुड़ी रहती है।
* श्रद्धासहित सत्पुरुष का वचन झेल लें, इसे **'सवा लाख का मोती'** कहा जाएगा।
* हमें बातें ऐसी करनी चाहिएँ कि सभी को भगवान और संत के प्रति सद्भाव उत्पन्न हो और उनके जीव को शांति मिले।
* मनोकामना किसी की पूरी नहीं हुई, मन का दुःख किसी का मिटता नहीं। **सुख का ठिकाना तो केवल भगवान या संत ही हैं।**
* यदि समागम करेंगे, तो फिर दुःख आएगा ही नहीं; समागम साथ रहता है। किसी को भूत चिपका हो, तो वह साथ-साथ आता है या नहीं? ऐसे ही 'समागम' साथ रहता है।
* जो प्रभु परायण होकर जीता है, भगवान उसका सब कुछ संभाल लेते हैं।
* प्रभु परायण होकर हम अपना बोझ भगवान के सिर पर डाल दें, तो भगवान हमारा व्यवहार संभाल लेते हैं। जिसने सत्संग किया हो, उसे डरने की जरूरत नहीं है। **सब कुछ भगवान के सिर पर डाल देंगे, तो भगवान हमारे काम अवश्य किया करेंगे।**
* जो हर पल जगत की बातों में-व्यवहार में ही उलझा रहता हो–वह **'कल्चर्ड मोती'** जैसा है। मुमुक्षु यदि मन, कर्म, वचन से सत्पुरुष का संग करे, वह 'ब्रह्मरूप' होता है।
* भगवान और संत का आसरा हो तो यमपुरी, चौरासी, गर्भवास टल जाता है और अक्षरधाम की प्राप्ति हो जाती है व आख़िरी जन्म हो जाता है।
* श्रद्धावान के पुरुषार्थ की पूर्णाहुति त्वरित होती है, पर श्रद्धा में कसर हो, तो कुछ प्राप्त होगा क्या? अतः **कथावार्ता सुनने के लिए आने की श्रद्धा हमें रखनी चाहिए।**
* हम **अपनी भूल सुधारेंगे तो हम में 'सद्गुण' आएँगे–भगवान के गुण आएँगे।**
* अंबरीष राजा को भगवान ने एक सुदर्शन चक्र दिया था, तो उसकी रक्षा हुई थी। हमें श्रीजी महाराज ने (शिक्षापत्री रूप) 212 सुदर्शन चक्र दिए हैं; वे हमारी रक्षा के लिए हैं। यदि हम **शिक्षापत्री का पालन करें, तो कभी दुःख नहीं आएगा।** जो पालन करेगा उसे दुःख आएगा ही नहीं और कदापि दुःख आ भी जाए, तो भगवान उस दुःख को उठा लेते हैं, हम पर आने देते नहीं।
* भगवान का कार्य खूब ज़ोरदार/प्रबल है। एक बार ब्रह्माजी रूठे, तो सौ ब्रह्मा खड़े कर दिए। भगवान ने ब्रह्माजी को सौंपा कार्य थमने नहीं दिया।
* **भगवान की शक्ति क्या? हज़ारों को आकर्षित करना और उन्हें शांति देनी।**
* महिमा से भगवान और संत का दर्शन करें या उनकी बातें सुनें, तो हमें श्रीजी महाराज का सुख-अक्षरधाम की प्राप्ति होगी!

* संत का संग मन से किस प्रकार करना चाहिए? *उनके प्रति निर्दोषबुद्धि रखनी और उन्हें सर्वज्ञ जानना चाहिए।*

  सर्वज्ञ जानने के बाद हमें क्या करना चाहिए? *अंतराय टाल देना चाहिए।*
* भगवान की जो महिमा हमने सुनी है और जानी है, उसे अन्यों को बताना, इसे 'वचन द्वारा' सेवा की-ऐसा कहा जाता है।
* **सत्पुरुष के शब्दों का मनन करें – इसे सत्पुरुष का 'समागम' कहा जाता है।**
* **जैसे व्यवहार की गरज़ है, वैसी गरज़ इस सत्संग की रखनी चाहिए।**
* हमें सौंपी गई क्रिया करने में परेशानी होती हो, तो कहना कि *'मुझे कुछ और क्रिया बताओ'*; लेकिन उदास नहीं होना।
* तलाशेंगे / भीतर में टटोलेंगे तो ख्याल पड़ेगा कि – यह जीव केवल प्रकृति को ही भजता है। प्रकृति के वश होकर बोलता है, सुनता है, देखता है, खाता है, घूमता रहता है, बैठा रहता है, सोए रहता है – यूं स्वयं को जिससे मज़े रहती हो, वह करता है।
* सिर्फ जरूरत का ही ख्याल रख कर, (पंचविषय से) मुड़ जाने का स्वभाव रखें, तो बड़े साधु की भी उस पर 'कृपादृष्टि' होती है।
* **सेवा के समय सेवा करनी और कथा के समय कथा में बैठना चाहिए।**
* बड़े सत्पुरुष की शक्ति खूब जबर्दस्त कही जाए। उस शक्ति में हम शामिल हो जाएँ और बड़े पुरुष को राज़ी कर लें, तो वे तो ऐसे ही देने के लिए बैठे हैं... यूँ कृपादृष्टि करके ज्ञान, वैराग्य, भक्ति व निर्दोषबुद्धि दे देते हैं। (अब तक भी) उनकी 'कृपादृष्टि' से सब कुछ टिका हुआ है।
* बड़े पुरुष के समागम में रहें, दर्शन करें, बातचीत सुनें और आज्ञा का पालन करें तो 'कृपादृष्टि' होती है।
* संकेत में हम मर्म समझ लें, तो हमारा काम हो गया!
* कारण शरीर को भेदना अत्यंत कठिन है। वह तो बहुत सख़्त आवरण है। लेकिन, भगवान और संत यदि मिल जाएँ, तो जैसे प्याज़ के छिलके निकाले जाते हैं, यूं आसानी से टाल दें; देरी नहीं लगती।
* 'ऐसे साधु में ही भगवान रहते हैं' – यह विश्वास रखना।
* भगवान और संत हमें 'साक्षात्कार' करा दें, तब (प्रगट की बात) समझी जाती है, जबकि हमें तो सहज ही अक्षर और पुरुषोत्तम की 'निष्ठा' हो गई। ये पूर्व के भारी संस्कार कहे जाएँगे। संस्कार के बिना (प्रगट की) निष्ठा बैठती नहीं।
* हम भले कितना ही काम करें, व्यवहार करें, लेकिन 'मोक्ष' की प्राप्ति नहीं हो, तो श्रद्धा किस काम की?
* मोक्ष यानि क्या? मोह का क्षय!
* जिसके पास ईश्वरी शक्ति हो, वह सब काम कर सकता है।
* व्यवहार के कार्य तो होते रहेंगे, लेकिन 'आत्यंतिक कल्याण' के लिए संतपुरुष का समागम और कथावार्ता सुनने का मौका दोबारा-फिर से नहीं मिल पाएगा।

(शेष अगले अंक में)

आत्मीयता से भरपूर 'आत्मीय युवा महोत्सव' 2015!

युवक मेरी पूजा है... युवक मेरा सर्वस्व है!

गुरुहरि योगीजी महाराज के उपरोक्त हार्द को जीवन ध्येय बना कर, दिन-रात अथक् परिश्रम करके, जिन्होंने अनगिनत युवाओं को श्रेय के मार्ग पर अग्रसर किया, ऐसे **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** द्वारा तैयार किए गए अद्‌भुत युवासमाज का दर्शन यानि-'**आत्मीय युवा महोत्सव**'-2015!

31 दिसंबर 2014 की **सायं 5:30** बजे **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई** के दिव्य सान्निध्य में *'हे महाराज! हे स्वामी! दास का दास बनाना...'* की प्रार्थना से गगन गूंज उठा और महोत्सव का मंगल प्रारंभ हुआ। फूलों से सुसज्जित रथ पर, सभी को दर्शन देते हुए, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने मंच के सम्मुख आसन ग्रहण किया। प.पू. स्वामिजी द्वारा युवकों के रूप में तैयार हुए जंगम तीर्थ के प्रतीक रूप पृष्ठ भूमि पर मंदिर का सुशोभन किया गया था। जैसे कि गुणातीत स्वरूप अकसर बताते हैं- *'ऐसे उत्सवों का दर्शन करने के लिए देवता भी लालायित होते हैं।'* इसी के प्रतीक रूप सूर्य-चंद्र का वेश धारण किए दो मुक्त एवं अन्य युवकों ने नृत्यनाटिका द्वारा, भक्ति, सेवा, निष्ठा, सुहृद्‌भाव एवं दासत्व का परिचय देते हुए, प.पू. स्वामिजी द्वारा तैयार किए गए दिव्य समाज का दर्शन कराया और... अंत में सभी मुक्तों के हृदयाकाश में विराजित प.पू. स्वामिजी, मंच पर मंदिर के मध्य में, श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति की निश्रा में बैठे। सभी हरिभक्तों ने दीपस्तुति से भाववंदना की! तत्पश्चात्, मंच पर स्थापित भारत के नक्शे के ऊपर आत्मीयता का ध्वज स्थापित करके, युवकों द्वारा प्रकटाई आत्मीय मशाल से, दीप प्रज्वलित करते हुए प.पू. स्वामिजी ने **'आत्मीय युवा महोत्सव'** का शुभारंभ किया।

1 जनवरी की **सुबह**, नए वर्ष -2015 में प्रवेश करते हुए, महोत्सव के **प्रथम सत्र** में मंच पर बिराजे **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई** एवं अतिथि विशेष-तीथल के **प.पू. जिनचंद्रजी महाराज**, कर्नाटक के राज्यपाल **श्री वजुभाई वाला** व विश्व हिन्दू परिषद् के **श्री अशोक सिंघलजी** का अभिनंदन करते हुए, **प.पू. स्वामिजी** ने आसन ग्रहण किया। सभा की शुरुआत **राष्ट्रगान** से हुई। कई युवाओं एवं संतों ने प.पू. स्वामिजी द्वारा मिले निरपेक्ष वात्सल्य की अनुभूति व्यक्त की। सभा के बीच में ही मुक्तों ने प.पू. स्वामिजी को हार अर्पण करके एवं भक्तिनृत्य द्वारा, अपनी भक्ति अदा की। अंत में प.पू. जिनचंद्रजी महाराज से आशिष प्राप्त करके सभी कृतार्थ हुए।

सायं-**द्वितीय सत्र** में, देश-विदेश के युवाओं ने आशिष याचना की और इसी बीच विश्ववंदनीय **श्री मुरारीबापुजी** का आगमन हुआ। प.पू. स्वामिजी एवं संतों ने उनका अभिनंदन किया। अलग-अलग प्रदेश के मुक्तों ने विशेष हारों द्वारा प.पू. स्वामिजी के प्रति अपनी भावना व्यक्त की।

प.पू. स्वामिजी ने जीवन में सत्संग एवं भक्ति की विशेषता-आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए, आशिष वर्षा की और... मुंबई मंडल के युवकों ने भक्तिनृत्य

(लावणी) द्वारा सभी को भक्तिरस में डूबो दिया!

श्री वल्लभाचार्य महाप्रभुजी वाक्पति विद्यापीठ के **प.पू. व्रजराजी महाराज** ने सभी को आशिष देते हुए शुभेच्छा व्यक्त की कि इसी तरह प.पू. स्वामिजी की शताब्दी मनाने के लिए भी हम सब एकत्रित हों। अंत में, इस महोत्सव को इक्कवीसवीं सदी के 'शगुन' के रूप में नवाज़ते हुए, **प.पू. मोरारीबापुजी** ने आशीर्वाद दिया।

2 जनवरी की **सुबह - तृतीय सत्र** में, सर्वप्रथम **पू. भक्तिप्रियस्वामी** ने माहात्म्य दर्शन कराया। इसी बीच हरिद्वार के भारतमाता मंदिर के अधिष्ठाता **प.पू. सत्यमित्रानंदगिरिजी महाराज** एवं **राष्ट्रीय स्वयंसेवक सरसंघचालक श्री मोहन भागवतजी** का इस दिव्य सभा में आगमन हुआ। सभा के प्रारंभ में राजकोट मंडल के छोटे बच्चों ने, भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रतिपादित गुरु परंपरा का दर्शन कराते हुए, गुजरात का प्रख्यात **'डायरा'** द्वारा स्वरुपों से प्रार्थना की। देश-विदेश के मुक्तों ने प.पू. स्वामिजी द्वारा उनके जीवन में हुए परिवर्तन-अनुभवों का दर्शन कराया।

'जीव को हर प्रकार से सुखी करने के सिवा संत को कोई अपेक्षा नहीं होती...' ऐसी भावना व्यक्त करते हुए **प.पू. स्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया। **श्री मोहन भागवतजी** ने युवाओं को संबोधित करके विदा ली। तत्पश्चात्, महाराष्ट्र सरकार के मंत्री **श्री सुभाषभाई देसाई** ने प.पू. स्वामिजी के साथ के अपने संबंध से अवगत कराया और **प.पू. सत्यमित्रानंदगिरिजी महाराज** ने, गुजरात से भेंट-रूप मिले सभी महान संतों का स्मरण करते हुए, अंतर से धन्यवाद किया। अलग-अलग प्रांतों से आए मुक्तों ने, प.पू. स्वामिजी को विशिष्ट हार अर्पण करके, अपनी भावना व्यक्त की! सत्संग के युवकों ने भी भजन के रूप में विभिन्न प्रांतों के लोकनृत्य जैसे – रास, भागंडा इत्यादि प्रस्तुत करके भक्ति अदा की। सभा के अंत में, प.पू. स्वामिजी से खूब आत्मीयता से जुड़े **डॉ. पंकज नरम** के पंद्रह वर्षीय सुपुत्र **पू. कृष्ण नरम** ने, 'जादू' द्वारा आत्मीयता की शक्ति – गुरुकृपा की शक्ति प्रदर्शित करते हुए, प.पू. स्वामिजी के श्रीचरणों में अपनी 'इगो' छोड़ने की प्रार्थना की! क्वीज़ के रूप में, प.पू. स्वामिजी से मिले ब्रह्मसूत्रों की जुगाली करते हुए, इस सत्र का समापन किया गया।

सायं **चतुर्थ सत्र** की शुरुआत में कुछ मुक्तों ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। थोड़ी ही देर में, श्वेत बादलों से घिरे, हंसों के झुंड वाले, रथ पर विराजमान प.पू. स्वामिजी ने सभामंडप में प्रवेश किया। **'स्वामिनारायण गादी संस्थान – मणीनगर'** के पू. महंतस्वामिजी एवं पू. भगवत्प्रियस्वामी ने प.पू. स्वामिजी को हार अर्पण किया! तदोपरांत **प.पू. पुरुषोत्तमप्रियस्वामिजी** द्वारा भेजा गया संदेशपत्र पू. त्यागवल्लभस्वामिजी द्वारा पढ़ कर सुनाया गया। अंकोडिया मंडल के मुक्तों ने प.पू. स्वामिजी की आयु के प्रतीक रूप 81 किलो गुलाब का हार प.पू. स्वामिजी को अर्पण किया।

तत्पश्चात्, **संत भगवंत प.पू. साहेबजी** ने आशीर्वाद देते हुए स्मृतियाँ कीं कि किस प्रकार ब्रह्मस्वरूप काकाजी – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी ने युवकों के भीतर गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति माहात्म्य भरा!

गढडा प्र. 27, 37, 62 और जेतलपुर 4, 5 निष्ठा के वचनामृतों का दृष्टांत देते हुए **प.पू. स्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया–

जैसे-जैसे 'निष्ठा' पक्की होती जाती है, वैसे–वैसे संबंध पक्का होता जाता है! 'प्रभु दिव्य, उनके संबंध वाले दिव्य'–ऐसा मानने पर हृदय में भगवान दृढ़ता से रहते हैं।

यौवन में माँ जैसे संत की आवश्यकता और उनके द्वारा रक्षण पर प्रकाश डालते हुए **प.पू. रमेशभाई** ओझा (पू. भाईश्री) ने सभी को आशीर्वाद दिया! प.पू. स्वामिजी के प्रति खूब सद्भाव से जुड़े ऑल इंडिया एन्टी टॅररिस्ट फ्रंट के अध्यक्ष **श्री मनीनदरसिंह बिट्टाजी** ने युवाओं को संदेश दिया। तदोपरांत, षष्टपीठाधीश्वर परम पूज्य गोस्वामी 108 **श्री द्वारकेशलालजी महाराजश्री** ने गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा प.पू. स्वामिजी को मिले अद्भुत नाम की सुंदर व्याख्या करते हुए कहा कि भक्तों का कितना सौभाग्य है कि उन्हें हरि भी मिले और प्रसाद भी मिला...

स्टेज पर विराजमान स्वरुपों एवं महानुभावों को पुष्प हार एवं स्मृति भेंट अर्पण के बाद, सभा संचालक पू. गुंजनभाई ने पू. सर्वमंगलस्वामी, पू. हरिशरणस्वामी एवं पू. सुज्ञेशस्वामी को प.पू. स्वामिजी की युवा प्रवृत्ति से भक्तों को अवगत कराने के लिए मंच पर बुलाया। तब प.पू. स्वामिजी की युवा प्रवृत्ति का परिचय देते हुए पू. सर्वमंगलस्वामी ने बहुत ही मार्मिक बात बताई– ***देखा जाए, तो प.पू. स्वामिजी ने दस वर्ष माँ-बाप के साथ गुज़ारे, दस वर्ष मित्रों के साथ, दस वर्ष गुरुहरि योगी बापा के साथ और 50 वर्ष युवकों के साथ व्यतीत किए हैं।***

इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि प.पू. स्वामिजी को युवक कितने प्रिय हैं। गुजरात के होम मिनिस्टर श्री रजनीभाई पटेल ने प.पू. स्वामिजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और फिर... हरिधाम के सभी प्रादेशिक संतों के मंच पर आने के बाद, प.पू. स्वामिजी द्वारा युवाओं को लिखे आशीर्वाद पत्र का उद्घाटन स्वयं प.पू. स्वामिजी से करवाया गया। अंत में, रंग-बिरंगे गुब्बारों के बीच प.पू. स्वामिजी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के साथ केक कटिंग की और विदेश से आए बच्चों द्वारा भक्तिनृत्य प्रस्तुत करने के बाद आत्मीयनमन से इस सत्र की पूर्णाहुति की गई।

3 जनवरी की **सुबह पंचम सत्र** में, प.पू. स्वामिजी के आगमन से पूर्व, **पू. भक्तिप्रियस्वामी** ने प.पू. स्वामिजी के माहात्म्य प्रसंगों में सभी को डुबो दिया और... फिर मंत्रपुष्पांजलि के श्लोक के नाद के साथ, फूलों से सुसज्जित रथ पर, प.पू. स्वामिजी ने प्रवेश किया। मंच पर सभी संतों एवं महानुभावों के विराजमान होने के बाद, 'आत्मीय विद्या मंदिर' में पढ़ने वाले, आठ वर्षीय **बालक हरि** ने अपना अनुभव बताया कि प.पू. स्वामिजी के आशीर्वाद से उसने अपने गुस्से पर किस प्रकार काबू पाया और प्रार्थना की...

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दी सूझ का दृष्टांत देते हुए **प.पू. स्वामिजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा– *स्वामी की बात प्रथम प्रकरण की पहली एवं आख़िरी बात–* ***'गुण गाने से जीव ब्रह्मरूप होता है'*** *–की ओर ध्यान देते हुए हम संबंध देखे, स्वभाव नहीं। किसी को भी 'तू' कह कर संबोधित न करें, 'आप' कह कर बुलाएँ... जब तक स्वामी की प्रकरण 16 की*

18वीं बात सिद्ध नहीं होगी, तब तक भगवान की मूर्ति में मन स्थिर नहीं होगा...

प.पू. स्वामिजी के आशीर्दान के बाद हरिद्वार-ऋषिकेश परमार्थ निकेतन के प.पू. चिदानंदमुनिजी ने आशीर्वाद दिया।

प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर के पू. रवि आर्टिस्ट से बनवाई **प.पू. स्वामिजी की पुश पिन** मूर्ति **प.पू. कोठारीस्वामिजी** को अर्पण की। इसी दौरान, प.पू. स्वामिजी की स्वास्थ्य-रक्षा हेतु जो डॉक्टर्स खूब आत्मीयता से आधी रात को भी हमेशा हाज़िर रहते हैं, उन्हें प.पू. स्वामिजी के वरद् हस्तों शाल व स्मृति भेंट अर्पण करवा कर सम्मानित किया गया और... पू. सुहृद्स्वामी एवं पू. अक्षरस्वामी ने दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से प.पू. स्वामिजी को हार अर्पण किया, तभी **प.पू. गुरुजी** ने आशिष प्रदान करते हुए कहा– *...भगवान का भव्य स्वरूप एकांतिकों के टोले एकत्रित करता है – इस तथ्य का आज यहाँ दर्शन हो रहा है... सो, जरूर मानना कि हम ऐसे एकांतिक मुक्त हैं, हैं और हैं ही... मैंने सुना कि कल आप सब करीब सात घंटे लगातार यहाँ बैठे रहे। कोई ऐसे ही नहीं बैठ सकता। सो, हमें क्या भव्य प्राप्ति हुई है, इसी के विचार में मस्त रहना। स्वामी की बातों में लिखा है कि इतनी सारी बातें सुनने के बाद एक ही बात समझनी है कि* ***'मैं स्वामी का हूँ और स्वामी मेरे हैं–*** *इस बात में सारा ज्ञान आ गया।' बस, यह एक बात दिल की सच्चाई से पकड़ ली हो, तो काकाजी कहते थे कि पूर्णाहुति आज ही हो गई! 365 दिन की भी राह नहीं देखनी पड़ती। इस शिविर की फलश्रुति के रूप यहाँ से एक बात लेकर जाएँ कि हम भले ही कैसे हैं, पर स्वामी मेरे और मैं स्वामी का...* ***कोई भी यह न समझे कि इतनी भारी संख्या में स्वामी से मिलना तो दूर की बात रही, पर आज उन्होंने मुझे देखा भी होगा क्या? हम सदैव यह स्मरण रखें कि हम अखंड स्वामी की नज़र में हैं। हम स्वामी की तरफ नज़र रख कर उन्हें अपना मानें, खुद को उनका मानें – यह हमारी उनके साथ 'आत्मीयता' है...***

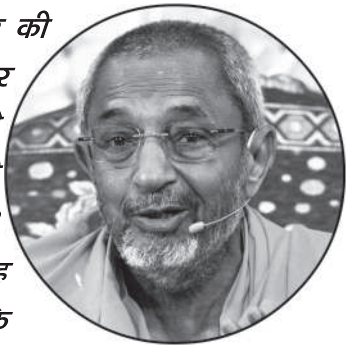

कुछ मुक्तों ने प.पू. स्वामिजी के 81वें प्राकट्य दिन की स्मृति करते हुए 81 फुट का हार उन्हें अर्पण किया! अंत में, भारतीय जनता पार्टी से राज्य सभा के सदस्य **श्री पुरुषोत्तमभाई रुपाला** ने प.पू. स्वामिजी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया।

आत्मीय युवा महोत्सव की यहाँ पूर्णाहुति नहीं हुई थी। प्रसाद लेने के बाद सभी को तुरंत ही **'अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन'** के लिए एकत्रित होना था। दोपहर करीब ढाई बजे **ब्रह्मस्वरूपिणी प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन, प.पू. जसु बहन** एवं **प.पू. प्रेम बहन** ने, अन्य बहनों के साथ, सभामंडप में प्रवेश करके मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया। भक्तिनृत्य द्वारा सभी का स्वागत किया गया। तभी सुसज्जित रथ पर बैठ कर 'जय गरवी गुजरात' के नाद के साथ **गुजरात की मुख्यमंत्री आदरणीय श्रीमती आनंदी बहन पटेल** का आगमन हुआ और... प.पू. प्रेम बहन ने हार, सम्मान पत्र एवं स्मृति भेंट द्वारा श्रीमती आनंदी बहन का सम्मान किया।

सर्वप्रथम, हरिधाम-'भक्तिआश्रम' की **पू. सर्वजीत बहन** ने, महिलाओं के उत्थान हेतु, भगवान

स्वामिनारायण के समय से जो प्रयास हुए और बाद में गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रेरणा से भगवत्स्वरूप काकाजी एवं भगवत्स्वरूप पप्पाजी ने बहनों को भगवान भजवाने की जो शुरुआत कराई, उसका खूब सटीक विवरण दिया। साथ ही, आज प.पू. स्वामिजी की सेरेछाया एवं प.पू. प्रेम बहन की निश्रा में महिलाएँ किस प्रकार उत्थान कर रही हैं इससे भी अवगत कराया। तत्पश्चात् सभासंचालक पू. सहज बहन ने **भारत के जन-जन प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी** द्वारा प्रेरित स्वच्छता अभियान में योगदान करने की शपथ दिलाई और श्रीमती आनंदी बहन ने स्त्रियों के प्रति समाज में फैली कुरीतिओं पर प्रकाश डाल कर जागरूकता प्रदान की। भक्तिआश्रम की वडील बहनों ने मंचस्थ प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन, प.पू. जसु बहन एवं महानुभावों का अभिवादन किया।

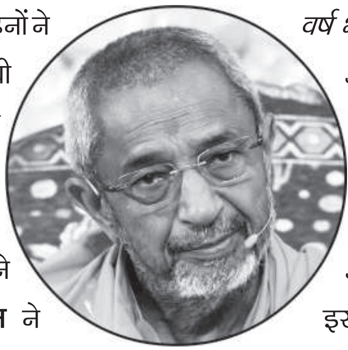

बहनों के भगवान भजने हेतु सर्वप्रथम पहल करके 'ब्रह्मभाव' पाने वाली विभूति **प.पू. ज्योति बहन** ने आशीर्वाद देते हुए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति करते हुए बात की कि किस प्रकार उन्होंने अपने तद्‌वद्‌भाव को पाए भगवत्स्वरूप काकाजी एवं भगवत्स्वरूप पप्पाजी जैसे स्वरूपों की भेंट दी और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के रूप में जो दूसरा ईंजन जोड़ा, उस रेलगाड़ी में बैठ कर आज सब प्रगट प्रभु की प्राप्ति का सुख ले रहे हैं।

हरिधाम-'भक्तिआश्रम' में भगवान भजने की पहल करने वाली **प.पू. प्रेम बहन** ने भी, प.पू. स्वामिजी के स्मृति प्रसंगों सहित आशिष प्रदान करते हुए, प्रार्थना की कि *हम सहजता से सत्पुरुष की मरजी में रहें और उन्हें कभी मोहताज न करके केवल भजन करने का बल लें...*

इस अधिवेशन के अंत में *'हैं हम सहजानंदी युवान, हैं हम गुरुहरि की शान...'* भजन पर भाववंदना की और पवई मंदिर में भगवान भजती **पू. माधुरी बहन**, जो पिछले दस दिन से मुंबई के अन्य मुक्तों के साथ हरिधाम आकर महोत्सव की सेवा में जुड़ीं थीं, को प.पू. प्रेम बहन द्वारा स्मृति भेंट दी गई।

महिला अधिवेशन के बाद देर रात्रि को **'स्वर्ण तुला महोत्सव'** हेतु प.पू. स्वामिजी एरावत हाथी के आकार के रथ पर विराजमान होकर सभामंडप में आए। *प.पू. स्वामिजी तो भक्तों के दिलों से तुले हैं, पर यह तो उनका भाव ग्रहण करने की अभिव्यक्ति है। यदि प्रति वर्ष भी उनकी स्वर्णतुला की जाए, तो भी उनका ऋण चुका नहीं सकते। वर्षों से लक्ष्मी के प्रति मन-बुद्धि में जो आसक्ति है, उससे निकालने के लिए-माया से संबंध तुड़वाने के लिए ऐसे उत्सव होते हैं...*

इस प्रकार प.पू. स्वामिजी का माहात्म्य दर्शन कराते हुए प.पू. कोठारीस्वामिजी, पू. प्रबोधस्वामी, पू. त्यागवल्लभस्वामी, पू. फुआ एवं पू. अशोकभाई ने सभा को संबोधित किया और... करीब तीन-साढ़े तीन घंटे के इस कार्यक्रम के बाद रात को पौने एक बजे **बृहद् गुणातीत समाज के गौरवस्वरूप 'आत्मीय युवा महोत्सव'** की दिव्य स्मृतियाँ संजो कर भक्तों ने विदाई ली। यूँ, भक्तिभाव, आत्मीयता, मर्यादा, विनम्रता और शिस्त का अद्‌भुत परिचय देते इन चार दिनों में, गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रेरणा से, **प.पू. स्वामिजी** द्वारा जारी रखी गई **युवा प्रवृत्ति के 60 वर्ष,** प.पू. स्वामिजी के **दीक्षा दिन के 50 वर्ष** और **81वाँ प्राकट्य पर्व** मनाते हुए ब्रह्मानंद में सभी सराबोर हुए!

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 15.2.'15, रविवार – प्र.ब्र. प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का 80वाँ प्राकट्य दिन
एकादशी – व्रत

(2) दि. 17.2.'15, मंगलवार – **महाशिवरात्रि**, व्रत
(ताड़देव मंदिर में सुबह 9:00 बजे 'लघुरुद्र')

(3) दि. 19.2.'15, गुरुवार – प.पू. गुरुजी की 78वीं प्राकट्य तिथि

(4) दि. 05.3.'15, गुरुवार – होली, होलिका दहन, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती

(5) दि. 06.3.'15, शुक्रवार – धुलेन्डी, *दिल्ली मंदिर में **चंदनोत्सव** – सुबह 9:00 बजे से...*
संत भगवंत प.पू. साहेबजी का प्राकट्य पर्व

(6) दि.07.3.'15, शनिवार – **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**

(7) दि.13.3.'15, शुक्रवार – प.पू. गुरुजी की 78वाँ प्राकट्य दिन,
ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव – सायं 5:30 बजे से...

(8) दि. 17.3.'15, मंगलवार – एकादशी – व्रत

(9) दि. 21.3.'15, शनिवार – चैत्री नूतन वर्षारंभ, 'गुडी पड़वा'

(10) दि. 28.3.'15, शनिवार – रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत

(11) दि. 31.3.'15, मंगलवार – एकादशी – व्रत

(12) दि. 02.4.'15, गुरुवार – गुरुहरि योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन

(13) दि. 04.4.'15, शनिवार – पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती

(14) दि. 15.4.'15, बुधवार – एकादशी – व्रत

(15) दि. 21.4.'15, मंगलवार – अखात्रीज

(16) दि. 22.4.'15, बुधवार – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि

(17) दि. 29.4.'15, बुधवार – एकादशी – व्रत

(18) दि. 02.5.'15, शनिवार – नृसिंह जयंती, फलारी व्रत

(20) दि. 14.5.'15, गुरुवार – एकादशी – व्रत

(21) दि. 15.5.'15, शुक्रवार – **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती**
प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि

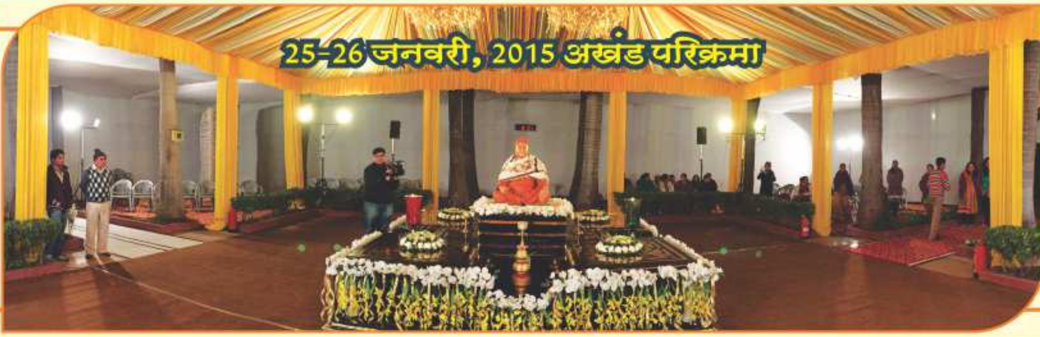

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052